D.El.Ed. IV Sem

Subject :- आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन - लेखन तथा संख्यापूर्व सम्बोधो/ क्षमताओं का विकास

Topic :- व्यंजन

ब्लॉक एवं टेगर के अनुसार - "व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण मे फेफड़े से आने वाली स्वरतन्त्री या मुख्य मार्ग से कही पूर्णतया रोकी जाती है या अत्यन्त संकुचित मार्ग से निकलती है या मुख्य विवर को स्वर सीमा से हटाते हुए जिह्वा के एक या दोनो ओर से निकलती है या स्वरतन्त्री से ऊपर वाले किसी वाक् अवयव मे कम्पन पैदा करती है।"

व्यंजनो को उच्चारण की दृष्टि से दो आधारो मे विभाजित किया जाता है।

1. उच्चारण स्थान 2. प्रयत्न

उच्चारण स्थान - व्यंजन ध्वनियो का उच्चारण करते समय हमारी श्वास वायु किसी-न किसी मुख्य अवयव से टकराती है उस अवयव को व्यंजन का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| 1. कंठ्य | गले से | क, ख, ग घ ङ. |
| 2. तालव्य | तालु से | च, छ, ज, झ ञ, य, श |
| 3. मूर्धन्य | तालु के मूर्धा भाग से | ट ठ ड, ढ, ण. ड़, ढ़, ष |
| 4. दन्त्य | दांतो के मूल से | त, थ, द ध |
| 5. वर्त्स्य | दंत मूल से | न, स ज, र, ल |
| 6. ओष्ठ्य | दोनो होठो से | प, फ, ब, भ |
| 7. दन्तोष्ठ्य | निचले होठ और ऊपर के दांतो से | व, फ |
| 8. स्वर यंत्रीय | स्वर यन्त्र से | ह |

Thankyou